जेरोन लेनियर,

वर्चुअल रियलिटी और सोशल मीडिया

जगदीश्वर चतुर्वेदी

जेरोन लेनियर, वर्चुअल रियलिटी और सोशल मीडिया

जगदीश्वर चतुर्वेदी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवम्बर, 2023

© जगदीश्वर चतुर्वेदी

अनुक्रम

वर्चुअल रियलिटी और रियलिटी टीवी शो	3
सोशल मीडिया और सांस्कृतिक विमर्श	21
सोशल मीडिया और पुराने सामाजिक संबंधों का अंत	56
फ़ेसबुक और विचारधारा	76
वर्चुअल रियलिटी और भाषाओं के नए युग की शुरुआत	94
वर्चुअल रियलिटी की चुनौतियाँ	154
फ़ेसबुक संस्कृति के 31 सूत्र	190
ब्रेन वाशिंग और वोट बैंक राजनीति	214
जेरोन लेनियर और सोशल मीडिया का दर्शनशास्त्र	230

वर्चुअल रियलिटी और रियलिटी टीवी शो

भारतीय समाज में तकनीक और विधाओं का प्रयोग हमेशा देर से शुरु होता है। नेट पर जब से ट्विटर आया है चर्चित व्यक्तित्वों का धीरे-धीरे जमघट बढ़ रहा है । ये लोग अपने व्यापार और व्यक्तित्व का बाज़ार बनाने के लिए ट्विटर का ज़्यादा इस्तेमाल कर रहे हैं। ट्विटर पर आने वाले ज़्यादातर वे लोग हैं जो गंभीर संकट में हैं, अलगाव से परेशान हैं अथवा बाज़ार की उठा-पटक में पिछड़ गए हैं।

आम तौर पर यह मान लिया जाता है कि जो चर्चित व्यक्तित्व है उसके सामने सुख भोगने के अलावा और कोई काम नहीं है। सच इसके एकदम उलट है । इस युग में सबसे ज़्यादा संकटग्रस्त कोई है तो वह चर्चित व्यक्तित्व है। झूठी शानो-शौकत ने उसकी सच्चाई पर मोटा पर्दा डाला हुआ है। उसकी इमेज सत्य से नहीं बनी है बल्कि वह तो मीडिया निर्मित नकली इमेज है । चर्चित व्यक्तित्व पर लिखते समय अथवा उसका लिखा पढ़ते समय अथवा उस पर पढ़ते समय यह ध्यान रखें कि लिखे का कभी एक ही अर्थ नहीं होता। ख़ासकर स्टार या अभिनेता की इमेज बहुआयामी होती है। संचार क्रांति के कारण हम इमेजों की महामारी के शिकार बनकर रह गए हैं ।

इंटरनेट के आने के साथ बड़े पैमाने पर खुलेपन की बहस चली और दुनिया में तरह-तरह के विचारकों ने इस पर काम किया था। इंटरनेट के खुलेपन के हिमायतियों में एक हैं जरोन लेनियर । लेनियर को वर्चुअल रियलिटी का जनक माना जाता है और उनका संचार की उन्नत तकनीक के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान भी है।

लेनियर की हाल ही में एक किताब आयी है जिसका नाम है ‘‘यू आर नॉट गजट’’, इस किताब में उन्होंने लिखा है मैंने आरंभ में इंटरनेट के फ़्री इस्तेमाल की हिमायत की थी और साहित्य, संगीत, कला आदि का आम यूज़रों ने इंस्टेंट इस्तेमाल किया था, जो भी रचना हम तैयार करते थे उसका यूज़रों के द्वारा इंस्टेंट इस्तेमाल होता था। आज हमें इस पर नए सिरे से सोचने की ज़रुरत है ।

लेनियर ने लिखा है कि इंटरनेट पर गुटबाज़ी हो रही है, उन्मादी गिरोह सक्रिय हैं, और घटिया किस्म के सामजिक-असामाजिक गुट बन रहे हैं । औसत बुद्धि के लोगों ने नेट पर जमघट लगा लिया है। लेनियर ने लिखा है हमने मुफ़्त सॉफ़्टवेयर का महिमामंडन किया और व्यक्तिगत सर्जनात्मकता की फ़्री सूचना और सामुदायिक सेवाकार्य के नाम पर उपेक्षा की । लेनियर ने इसके लिए वेब की ‘अनाम’ परंपरा को दोषी ठहराया है ।

ब्लॉग, फ़ोरम और सोशल नेटकर्क आदि ने 'अनाम' की परंपरा और औसत सृजन के बढ़ावा दिया है। इसका आदर्श उदाहरण है विकीपीडिया। लेनियर ने लिखा है कि ''खुली संस्कृति'' और ''मुफ़्त सूचना'' ने विध्वंसक सामाजिक संपर्कों को जन्म दिया है। इस संपर्क के कारण यह धारणा बलबती हुई है कि लेखकों, पत्रकारों, कलाकारों, पत्रकारों आदि से मुफ़्त में सामग्री ली जा सकती है। अब सब कुछ सेल्फ़ प्रमोशन यानी विज्ञापन बनकर रह गया है।

आम तौर पर फोकटिया ज्ञान पाने वाले यह भूल ही जाते हैं कि ज्ञान के निर्माण में धन, कल्पना, बुद्धि, विवेक आदि का भी ख़र्चा होता है और हमें ज्ञान को फ़्री में पाने की मानसिकता से बचना चाहिए। उल्लेखनीय है कि जरोन लेनियर ने ही फोकट में ज्ञान बांटने की हिमायत की थी आज उन्हें इसमें कारपोरेट हितों की रक्षा के कारण समस्या नज़र आ रही है।

यह सच है कि इंटरनेट पर गुणवत्तापूर्ण और विश्वसनीय लेखन में गिरावट आयी है और यूज़र के पास सही क्या है और ग़लत क्या है इसका अभाव बार-बार महसूस किया गया है । हिन्दी में अनेक वेबसाइट हैं जो विशुद्ध सनसनी फैलाने और ब्लेकमेलर छुटभैय्या पत्रकार की भाषा और सामग्री का इस्तेमाल करती रहती हैं। हिन्दी में ही क्यों अन्य भाषाओं में भी यही स्थिति है। लेनियर ने स्वयं एक ज़माने में बेव पर आने वालों को 'डिजिटल किसान' कहा था।